संजीवनी पब्लिक स्कूल

विषय हिन्दी, कक्षा नवम, दत्त कार्य

पुस्तक :- क्षितिजा पाठ - 2

अंक भार :- 6 मेरे संग की औरतें

पाठ-1 हमारे पाठ्यक्रम में से कट चुका है।

अभ्यास प्रश्नोत्तर :-

प्रश्न 1 लेखिका ने अपनी नानी को कभी नहीं देखा था फिर भी उनके व्यक्तित्व से प्रभावित क्यों थीं?

उत्तर 2 लेखिका की नानी की मृत्यु लेखिका की माँ की शादी होने से पहले ही हो गई थी, अतः उन्हें देखने का प्रश्न ही नहीं उठता था। लेकिन लेखिका ने नानी के बारे में बहुत कुछ सुना था। उसे सुने हुए वृतांत के आधार पर लेखिका नानी के व्यक्तित्व से प्रभावित हो गई थी। नानी अनपढ़ होते हुए भी अपना स्वतन्त्र व्यक्तित्व रखती थी। नानी के मन में आजादी के प्रति जुनून था। वे नीजि जीवन में भी आजाद ख्याल की थीं। वे जीवन के अंतिम दिनों में पुत्री के विवाह को लेकर चिंतित थी।

प्रश्न 2. लेखिका की नानी की आजादी के आन्दोलन में किस प्रकार की भागीदारी रही?

उत्तर 2. लेखिका की नानी की आजादी के आन्दोलन में प्रत्यक्ष रूप से भले ही भागीदारी न हो, पर वे दिल से उसमें शामिल थीं। उन्होंने अपने पीत के उस मित्र को अपना विश्वास पात्र बनाया जो स्वतन्त्रता सेनानी था। उससे अपनी बेटी के लिए ऐसा वर ढूँढने का आग्रह किया जो आजादी का सिपाही हो। वैसे उनके मन में आजादी के लिए जुनून था।

प्रश्न 3 लेखिका की माँ परंपरा का निर्वाह न करते हुए भी सबके दिलों पर राज करती थी। इस कथन के आलोक में —

क) लेखिका की माँ की विशेषताएँ लिखिए :-

उत्तर 3/क :- लेखिका की माँ परंपरा का निर्वाह नहीं करती थीं। फिर भी परिवार के सभी सदस्यों के दिलों पर राज करती थी क्योंकि :-

Page-1

Scanned with CamScanner

1. वे सुन्दर व्यक्तित्व की स्वामिनी थीं।
2. वे खूबसूरत और नाजुक थी।
3. वे ईमानदार और निष्पक्ष थी।
4. वे दूसरों की गोपनीय बातों को दूसरों पर प्रकट नहीं करती थी।

ख) लेखिका की दादी के घर के माहौल का शब्द-चित्र अंकित कीजिए।

उत्तर 3/ख:- लेखिका की दादी के घर का माहौल अच्छा था। वे अपनी बहू पर किसी प्रकार का ताना-उलाहना नहीं देते थे। दादी के साथ घर में परदादी भी थीं। वे अपनी पतोहू के यहाँ लड़की होने की मन्नत माँग कर आई थीं। घर पर आजादी का माहौल था।

प्रश्न 4. आप अपनी कल्पना से लिखिए कि परदादी ने पतोहू के पहले बच्चे के रूप में लड़की होने की मन्नत क्यों माँगी?

उत्तर 4 परदादी ने पतोहू के पहले बच्चे के रूप में लड़की पैदा होने की मन्नत इसीलिए माँगी होगी क्योंकि उन्हें लीक से हटकर चलने की आदत थी। सामान्यतः पहली सन्तान के रूप में पुत्र की माँग की जाती है, परन्तु परदादी को कतार से हटकर चलने की आदत थी। उनके मन में लड़कियों के प्रति विशेष स्नेह भी था।

प्रश्न 5. डराने धमकाने या उपदेश देने के स्थान पर किसी को भी सहजता से सही रास्ते पर लाया जा सकता है - पाठ के आधार पर तर्क दीजिए।

उत्तर 5. जब एक बार लेखिका के घर में चोर घुस आया था, तब परदादी ने उसे डराया धमकाया या उपदेश नहीं दिया, न ही उसके ऊपर दबाव ही डाला गया। परदादी ने उसके साथ सहज व्यवहार किया। उससे अपने लिए पानी मँगवाया तथा आधा लौटा उसे भी पिलाया। उसे अपना बेटा बताया। इस सहज व्यवहार से वह चोरी छोड़ कर खेती के काम पर लग गया।

प्रश्न 6. 'शिक्षा बच्चों का जन्मसिद्ध अधिकार है' - इस कथन के आधार पर लेखिका के प्रयासों का उल्लेख कीजिए।

Scanned with CamScanner

उत्तर 6 लेखिका मानती थी कि शिक्षा बच्चों का जन्मसिद्ध अधिकार है। लेखिका जब कर्नाटक के छोटे से कस्बे बागलकोट में थी तब वहाँ कोई ढंग का स्कूल न था। उसने कैथोलिक बिशप से स्कूल खोलने की प्रार्थना की, पर वे स्कूल नहीं खोलना चाहते थे क्योंकि वहाँ क्रिश्चियन बच्चों की संख्या कम थी। लेखिका सभी की शिक्षा की पक्षधर थी। उसने अपने प्रयासों से एक ऐसा स्कूल खोल कर दिखा दिया जिसमें बच्चों को अंग्रेजी हिन्दी और कन्नड़ तीनों भाषाएँ पढ़ाई जाती थी। इसे कर्नाटक सरकार द्वारा मान्यता भी दिला दी।

प्रश्न 7. पाठ के आधार पर बताइए कि जीवन में कैसे लोगों को अधिक श्रद्धा के भाव से देखा जाता है।

उत्तर 7. पाठ के आधार पर निम्न प्रकार के लोगों को श्रद्धा भाव से देखा जाता है:-

1. जो सदा सच बोलते हो।
2. जो किसी एक की गोपनीय बात किसी दूसरे पर प्रकट न करें।
3. जो इरादों में मजबूत हो।
4. जो सदा सहज व्यवहार करें।
5. जो हीन भावना के शिकार न हो।

प्रश्न 8. 'सच अकेलेपन का मजा ही कुछ और है' इस कथन के आधार पर लेखिका की बहन रेणु के व्यक्तित्व पर अपने विचार प्रकट करें।

उत्तर 8. लेखिका की बहन रेणु अपनी मरजी की मालिकिन थी। वे जो कुछ ठान लेती थी, उसे पूरा करके ही छोड़ती थी। एक बार बहुत वर्षा हुई। कोई वाहन सड़क पर नहीं था। उस दिन रेणु की स्कूल बस भी उसे लेने नहीं आई थी तो वह पैदल ही चली गई। स्कूल बंद था। उसे इस बात का कोई दुख नहीं था। वह वापिस 2 मील चलकर घर पहुँच गई।

लेखिका इस घटना को सुनकर रोमांचित हो उठी। उसे भी लगा कि सच अकेलेपन का मजा ही कुछ और है।

Scanned with CamScanner

संजीवनी पब्लिक स्कूल, कक्षा: नवमी, विषय: हिन्दी
पुस्तक: क्षितिज, पाठ-1 दो बैलों की कथा.
गृह कार्य
कहानी का सार कॉपी में लिखो

1. जानवरों में गधे को सबसे अधिक मूर्ख समझा जाता है। जब हम किसी व्यक्ति को बेवकूफ कहना चाहते हैं तब हम उसे गधा कह देते हैं। गाएँ सींग मारती हैं। ब्याही हुई गाय तो शेरनी का रूप धारण कर लेती है। कुत्ता बेशक गरीब जानवर है, पर उसे भी कभी-कभी क्रोध आ ही जाता है। पर गधे को किसी पर क्रोध करते नहीं देखा। उसके चेहरे पर हर समय विषाद ही छाया रहता है। ऋषि-मुनियों में जितने गुण होते हैं वे सब गधे में भी पाए जाते हैं पर आदमी उसे बेवकूफ कहता है। सीधेपन की ऐसी दुर्दशा ठीक नहीं है। भारतीयों की विदेशों में इसीलिए दुर्दशा हो रही है, क्योंकि वे ईंट का जवाब पत्थर से देना नहीं जानते। गधे का एक छोटा भाई है - बैल। पर बैल कई तरीकों से अपना रोष प्रकट कर देता है।

2. झूरी काछी के पास दो बैल हीरा-मोती थे। दोनों बहुत सुन्दर थे। दोनों में भाईचारा था। दोनों एक-दूसरे को चाटकर और सूँघकर अपना प्रेम प्रकट करते थे। दोनों साथ-साथ ही खली-भूसा खाते थे। झूरी ने एक बार अपने बैलों को गया के साथ भेज दिया। बैल समझे उन्हें बेच दिया गया है। वे दोनों असन्तुष्ट हो गए। संध्या समय बैल अपने नए स्थान पर पहुँच गए। लेकिन रात को ही वे रस्सियाँ तुड़ा कर झूरी के घर आ गए। प्रातः काल झूरी ने उन्हें देखा तो गले लगा लिया।

3. दूसरे दिन झूरी का साला फिर आया और दोनों बैलों को गाड़ी में जोतकर ले गया। घर ले जाकर दोनों को मोटी रस्सियाँ बाँध दी, और खाने के लिए सूखा भूसा डाल दिया। दोनों बैलों ने बड़े अपमान को सहा। दूसरे दिन उन्हें हल में जोता गया, पर बैलों ने पाँव नहीं उठाया। हीरा की नाक पर खूब डंडे बरसाए गए। मोती को गुस्सा आ गया और वे हल ले कर भागा। गया उसे दो आदमियों की मदद से ही पकड़ पाया। घर ला कर दोनो के आगे सूखा भूसा डाल दिया। उसी समय एक छोटी सी लड़की उनके लिए दो रोटियाँ ले आई। लड़की भैरों की थी। उसकी सौतेली माँ उसे मारती थी। बैलों के साथ उसे आत्मीयता हो गई थी। लड़की ने बैलों की रस्सियां खोल उन्हें भगा दिया। बैलों को रास्ते में मटर का खेत मिला। दोनों ने भरपेट खाया।

4. सामने से एक साँड चला आ रहा था। हीरा और मोती ने मिल कर उसे हरा दिया। हीरा ने उसे रगेदा और मोती ने बगल में सींग भोंक दिया। साँड बेदम हो कर गिर गया। मोती फिर मटर के खेत में घुस गया। और खेत के रखवालों ने उन्हे काँजीहौस में बंद करवा दिया।

5. काँजीहौस में कई भैंसें, बकरियाँ, घोड़े, गधे बंद थे। किसी के आगे चारा

Poonam

नहीं था। हीरा के दिल में विद्रोह पनप रहा था। वे भागने के उपाय सोचने लगे। बाड़े की दीवार कच्ची थी। हीरा ने अपने नुकिले सींग दीवार में गड़ा दिए। मिट्टी गिरने लगी। तभी वहाँ का चौकीदार जानवरों की हाजिरी लेने आ गया। उसने हीरा पर डंडे बरसाए। बाद में मोती ने भी दीवार में सींग मारे। दूसरे धक्के में आधी दिवार गिर पड़ी। दीवार के गिरते ही सब जानवर वहाँ से भाग गए। हीरा रस्सियों में बंधा था इसीलिए मोती उसे छोड़कर नहीं भागा। सवेरा होने पर मुंशी ने दोनों को बांध दिया।

6. वे दोनों वहाँ एक सप्ताह तक बंधे रहे। फिर उनकी निलामी का दिन आ गया। एक दढ़ियल कसाई ने उन्हें खरीद लिया, और साथ ले कर चला। परिचित रास्ते को देखकर वे दोनों वहाँ से भाग लिए और झूरी के यहाँ आ कर खड़े हो गए। बैलों को देखते ही झूरी ने उन्हें गले लगा लिया। दढ़ियल के आने पर झूरी ने उसे वहाँ से भगा दिया। झूरी के घर में बैलों का स्वागत सत्कार हुआ।

अभ्यास प्रश्नोत्तर : पुस्तक से पूरे प्रश्न लिखो

प्रश्न1. काँजीहौस में — — — — — — क्यों ली जाती होगी?

उत्तर: काँजीहौस में लावारिस पशुओं को पकड़ बंद किया जाता है तथा उनका रिकॉर्ड एक रजिस्टर में रखा जाता है। उन पशुओं की हाजिरी इस लिए ली जाती है ताकि पता लग सके कि कोई पशु गायब तो नहीं है।

प्रश्न2. छोटी बच्ची — — — — — — उमड़ आया?

उत्तर: छोटी बच्ची की माँ मर गई थी। उसकी सौतेली माँ उसे प्यार नहीं करती थी, बल्कि मारती रहती थी। वह बच्ची प्रेम की भूखी थी घर में बैलों को भूखा देखकर उसके प्रति उनके मन में प्रेम उमड़ आया था। वह उन्हें रोटी खिलाने आती थी।

प्रश्न3. कहानी में बैलों — — — — — — — मूल्य उभरकर आए हैं?

उत्तर: कहानी में निम्न नीति विषयक मूल्य उभर कर सामने आए हैं:-

1. सीधापन और सहिष्णुता वांछनीय गुण हैं। इनका सम्मान करना चाहिए।
2. हमें पशुओं के साथ क्रूरता नहीं स्नेहपूर्ण व्यवहार करना चाहिए।
3. प्राणियों के लिए स्वतन्त्रता सर्वोपरि है। इसकी रक्षा करनी चाहिए।
4. आपस में सहयोगपूर्ण व्यवहार करना चाहिए इससे समस्याएं सुलझती हैं।

प्रश्न4. प्रस्तुत कहानी — — — — — अर्थ की ओर संकेत किया है?

उत्तर: प्रायः लोग गधे को रूढ़ अर्थ 'मूर्ख' के लिए प्रयुक्त करते हैं, पर लेखक ने गधे की स्वभावगत विशेषताएँ बताते हुए उसे सीधा और सहिष्णु जानवर बताया है। उसके सीधेपन और निरापद सहिष्णुता की वजह से उसे यह पदवी दी गई है। गधे में तो वे सभी गुण, पराकाष्ठा को पहुँच गए हैं, जो ऋषि-मुनियों में अपेक्षित मानी जाती हैं।

प्रश्न5. किन घटनाओं — — — — — — गहरी दोस्ती थी?

उत्तर5 निम्न घटनाओं से पता चलता है कि हीरा-मोती में गहरी दोस्ती थी

1. दोनों एक-दूसरे को चाटकर सूंघकर अपना प्रेमप्रकट करते थे।
2. दोनों हल में जोते जाने पर अधिक से अधिक बोझ अपने पर रखने की चेष्टा करते थे। (3) दोनों मूक भाषा में बात करते थे। (4) दोनों ने मिल कर मटर चरी (5) दोनों ने मिलकर साँड को मार भगाया।

Scanned with CamScanner

संजीवनी पब्लिक स्कूल, कक्षा नवम, विषय हिन्दी

पुस्तक : क्षितिज पाठ : 2 लेखक : राहुल सांकृत्यायन

ल्हासा की ओर

गृह कार्य / पूरा कार्य रजिस्टर में करें

पाठ का सार

इस पाठ में लेखक ने नेपाल से तिब्बत की ओर जाने की यात्रा का वर्णन किया है। यह रास्ता तिब्बत जाने का मुख्य मार्ग है। जब फरी-कलिङ्पोङ् का रास्ता नहीं खुला था तब नेपाल ही नहीं हिंदुस्तान की चीजें भी इसी रास्ते तिब्बत जाया करती थी। अब इस रास्ते में जगह-जगह चौकियाँ और किले बने हुए हैं। इनमें कभी चीनी पलटन रहा करती थी। अब वहाँ किसानों ने कब्जा लिया है। ऐसे ही एक किले में लेखक ठहरा था। तिब्बत में यात्रियों के लिए बहुत तकलीफें हैं पर वहाँ कई बातें अच्छी भी हैं। वहाँ जाति-पाँति तथा छुआछूत का सवाल नहीं है। वहाँ की औरतें परदा भी नहीं करती। भिखमंगों को लोग चोरी के डर से अपने घर में नहीं आने देते। वैसे आप किसी भी घर में जा कर अपने लिए चाय बनवा सकते हैं। मक्खन और सोडा नमक भी कूटकर डाल देगी।

जब लेखक और उसका साथी चीनी किले से चलने लगे तो एक आदमी राहदारी माँगने आ गया। यात्रियों ने दोनो चिटे उसे दे दीं। लेखक के साथी का नाम सुमति था। मार्ग में उसकी जान-पहचान के लोग मिलने आए। उन्हे ठहरने के लिए भी अच्छी जगह मिली, जबकि लौटते समय घोड़े पर सवार होने के बावजूद अच्छी जगह नहीं मिल पाई। अब उन्हे डाँडा थोङ्ला पार करना था; डाँडे तिब्बत की सबसे खतरनाक जगहें हैं। 16-17 हजार फिट ऊँचाई होने के कारण उनके दोनो तरफ कोई गाँव नहीं है। वहाँ दूर-दूर तक कोई आदमी दिखाई नहीं देते हैं। यह जगह डाकुओं के लिए सुरक्षित है। यहाँ किसी का खून हो जाना बहुत सामान्य सी बात है। हथियार का कानून न होने के कारण यहाँ लोग बंदूक और पिस्तौल लाठी की तरह लिए फिरते हैं।

Scanned with CamScanner

लेखक और सुमति घोड़ों पर सवार होकर ऊपर की ओर चले। वे समुद्रतल से 17-18 हजार फिट की ऊँचाई पर खड़े थे। चोटी की दिखाई देने वाले पहाड़ बिल्कुल नंगे थे, न वहाँ बर्फ की सफेदी थी और न ही किसी तरह की हरियाली। सबसे ऊँचे स्थान पर डाँडे के देवता का स्थान था जिसे पत्थरों, जनवरों के सींगों और रंग-बिरंगी- कपड़े की झंडियों से सजाया गया था, अब लेखक को उतराई पार करनी थी। उसका घोड़ा धीमा चल रहा था। लेखक ने समझा कि चढ़ाई की थकावट के कारण घोड़ा ऐसा कर रहा है। गाँव में सुमति इंतजार करते मिले। पहले तो वे देर से आने के कारण गुस्सा हुए, पर जल्दी ही ठंडे हो गए। उन्होंने चाय-सत्तू खाया, रात को गर्मागर्म थुक्पा मिला।

अब वे एक विशाल मैदान में थे। वहाँ एक छोटी सी पहाड़ी थी। यहाँ के आस-पास के गाँव में सुमति के बहुत से यजमान थे। सुमति उनको बोधगया से लाए कपड़े के गंडे बाँट रहे थे। लेखक ने सोचा कि ये तो इस प्रकार एक हफ्ता लगा देगा। लेखक ने ल्हासा चलकर कपड़े देने का लालच दिया वे मान गए। वे दिन की तेज धूप में चल रहे थे। तिब्बत की धूप बड़ी कड़ी होती है। तिब्बत की अधिक जमीन छोटे-बड़े जागीरदारों में बँटी है। इन जागीरो का बहुत सारा हिस्सा मठों (विहारों) के हाथ में है। यहाँ मजदूर बेगार में मिल जाते हैं। खेती का इन्तजाम देखने के लिए कोई भिक्षु भेजा जाता था, जो जागीर के आदमियों के लिए राजा से कम नहीं होता था। वहाँ एक बौद्ध मन्दिर भी था जिसमें कंजूर (बुद्ध वचन अनुवाद) की हस्तलिखित 103 पोथियाँ रखी हुई थी। लेखक ने अपना आसन वहीं जमा लिया। ये पोथियाँ कागज पर अच्छे अक्षरों में लिखी थी। एक-एक पोथी 15 सेर वजन से कम न होगी। अब की बार लेखक ने सुमति को अपने यजमानों के पास जाने दिया। अपना-अपना सामान पीठ पर लाद कर भिक्षु नमसे से विदाई ले कर वे चल पड़े।

Scanned with CamScanner

प्रश्न - अभ्यास

प्रश्न 1:- थोंङ्ला के पहले के आखिरी गाँव पहुँचने पर भिखमंगे के वेश में होने के बावजूद लेखक को ठहरने के लिए उचित स्थान मिला जबकि दूसरी यात्रा के समय भद्र वेश भी उन्हें उचित स्थान नहीं दिला सका। क्यों?

उत्तर 1:- किस जगह ठहरने का स्थान मिलेगा यह उस वक्त वहाँ के लोगों की मनोवृति पर निर्भर होता है। थोङ्ला के पहले के आखिरी गाँव में सुमति के जान-पहचान के लोग थे। अतः उन्हे भिखमंगों जैसी वेशभूषा होने पर भी अच्छी जगह ठहरने को मिली। पाँच साल बाद वे उसी रास्ते से लौटे थे। तब वे भद्रवेश में थे, तथा घोड़ों पर सवार थे। इसके बावजूद उन्हे गरीब के झोपड़ें में ठहरना पड़ा था। शाम के वक्त वहाँ के लोग छंग पीते है और होश-हवास खो बैठते है।

प्रश्न 2:- उस समय तिब्बत में हथियार कानून न रहने के कारण यात्रियों को किस प्रकार का भय बना रहता था?

उत्तर 2:- उन दिनों तिब्बत में हथियार कानून न था। लोग वहाँ पिस्तौल - बंदूक लाठी की तरह लिए फिरते थे। इससे लोगों को अपनी जान - माल का भय बना रहता था। डाकुओं का आतंक भी रहता था। डकैत पहले आदमी को मारता था और उसके बाद उसका धन लूटता था।

प्रश्न 3:- लेखक लङ्कोर के मार्ग में अपने साथियों से किस कारण पिछड़ गया?

उत्तर 3:- लङ्कोर से लेखक को घोड़े पर बैठकर चढ़ाई करनी थी। लेखक का घोड़ा धीरे - धीरे चलने लगा। लेखक ने समझा कि घोड़ा चढ़ाई की थकावट के कारण ऐसा कर रहा है। वह उसे मारना नहीं चाहता था। इस प्रकार धीरे - धीरे वह अपने साथियों से पिछड़ गया। लेखक के जोर देने लगता, तो वह सुस्त पड़ जाता था।

प्रश्न 4:- लेखक ने शेकर विहार में सुमति को उसके यजमानों

Scanned with CamScanner

किया?

शेखर विहार के आस-पास के गावों में सुमीत के यजमा
संख्या बहुत अधिक थी। वे गंडे देने के लिए अपने यजमा
पास जाना चाहते थे। इस काम में उन्हे एक हफ्ता लग
अत: लेखक ने सुमीत को यजमानों के पास जाने से रोक
परन्तु दूसरी बार लेखक ने सुमीत को यजमानों के पास जं
नही रोका, क्योंकि उसे कन्जुर की हस्तलिखित पोथियें
कांत में पढ़नी थी।

न 5:- लेखक को अपनी यात्रा के दौरान किन-किन कठिना
का सामना करना पड़ा?

तर 5. लेखक को अपनी यात्रा के दौरान निम्न कठिनाइयों
का सामना करना पड़ा?

- लौटते समय उसे ठहरने के लिए अच्छा स्थान नहीं मिला। उसे एक गरीब के झोंपड़े में रहना पड़ा।
- लेखक को कई बार डाकुओं के सामने भीख माँगने का नाटक करना पड़ा। जिससे उनकी जान बच जाए।
- लेखक का घोड़ा उतराई के समय बहुत धीरे-धीरे चल रहा था। अत: वह पिछड़ गया।
- उन्हे भार ढोने के लिए भरिया नहीं मिल रहा था।
- उन्हे तिब्बत की कड़ी धूप का सामना करना पड़ा।

Scanned with CamScanner